RESULT MITRA

(Test 1)

1. उद्देश्य प्राप्ति में यह परम आवश्यक है कि आप अपने शारीरिक एवं मानसिक बल को अधिक प्रयोग में लायें। पराश्रित बैठने वाले कभी भी सफल नहीं होते हैं। आजकल के नवयुवक सदा दूसरे का मुँह निहारा करते हैं या समय और भाग्य को कोसा करते हैं। उचित अवसर की खोज व्यक्ति को स्वयं करनी पड़ती है, फिर अपने विवेक, संयम और परिश्रम से दृढ़ संकल्प हो आगे बढ़े, तो उद्देश्य स्वयं ही आपकी ओर बढ़ेगा। कतिपय लोग तो सदा ही समाज और समय से रूष्ट रहते हैं। वे परिस्थितियों के प्रतिकूल होने की आड़ में अपने प्रमाद को ओढ़े रहते हैं। छात्रावस्था में व्यवहारिकता का अभाव प्रायः देखा जाता है। ऐसे में अनुभवी व्यक्तियों के अनुभवों का लाभ उठाकर सफलता प्राप्त होती है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। 5

इस गद्यांश में लेखक ने आत्मनिर्भरता, श्रम और विवेक की महत्ता बताई है। व्यक्ति को अपने शारीरिक एवं मानसिक बल का प्रयोग कर, स्वयं अवसर की खोज करनी चाहिए। केवल भाग्य, समय या दूसरों पर निर्भर रहने वाले लोग लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते। कुछ लोग परिस्थितियों को दोष देते हैं और अपने प्रमाद को छिपाते हैं। विशेषतः छात्र जीवन में व्यावहारिकता का अभाव देखा जाता है, इसलिए अनुभवी लोगों से सीखकर आगे बढ़ना चाहिए।

(ख) उद्देश्य प्राप्ति के लिए क्या करना अपेक्षित है? उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 5

उद्देश्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनना चाहिए, न कि दूसरों या भाग्य पर निर्भर। अपने विवेक, संयम और परिश्रम से उचित अवसर की खोज कर आगे बढ़ना आवश्यक है। सामाजिक परिस्थितियों को दोष देना समाधान नहीं है, बल्कि व्यवहारिक सोच और अनुभवी मार्गदर्शन को अपनाकर लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए। 20

उपर्युक्त पंक्ति का सार यह है कि जीवन में किसी भी लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए केवल इच्छाशक्ति या भाग्य पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि व्यक्ति को अपने भीतर निहित शारीरिक क्षमता और मानसिक बल का भी समुचित उपयोग करना होता है। शारीरिक बल परिश्रम, दृढ़ता और कर्मशीलता का प्रतीक है, जबकि मानसिक बल विवेक, धैर्य, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता से जुड़ा होता है।

वर्तमान समय में जब प्रतिस्पर्धा और चुनौतियाँ निरंतर बढ़ रही हैं, तब केवल कल्पना या आशा से नहीं, बल्कि सुनियोजित परिश्रम और सकारात्मक दृष्टिकोण से ही सफलता संभव है। जो व्यक्ति परिस्थितियों से डरकर दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं, वे अपने लक्ष्य तक कभी नहीं पहुँच पाते। इसके विपरीत, जो लोग अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानकर उनका कार्य में उचित प्रयोग करते हैं, वे किसी भी कठिनाई को पार कर लेते हैं।

इसलिए उद्देश्य प्राप्ति का मार्ग स्वयं के भीतर से ही निकलता है। आत्मनिर्भरता, कर्मशीलता और मानसिक दृढ़ता को अपनाकर ही हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

2. प्रबुद्ध मानव और अन्य प्राणियों में सबसे बड़ा अंतर है - मानव की वह क्षमता जिससे उसने भाषा का विकास किया है। भाषा की आवश्यकता इस बात से स्पष्ट होती है कि बिना उसके मानव का कोई भी काम सरलता से संभव नहीं है। इस भाषा को वह अनेक तरह से आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाता है। इसलिए जब हम बातचीत के लिए भाषा का प्रयोग करते हैं तो वह भाषा 'सामान्य भाषा' कहलाती है। जब हम उसका प्रयोग कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि लिखने के लिए

करते हैं तो उसे 'साहित्यिक भाषा' कहते हैं। जब हम वैज्ञानिक या तकनीकी विषयों के बारे में जानने के लिए भाषा को माध्यम बनाते हैं तब उस भाषा को 'वैज्ञानिक' या 'तकनीकी भाषा' कहते हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 5

"भाषा की विविधता और उपयोगिता"

(ख) सामान्य-भाषा और वैज्ञानिक-तकनीकी भाषा का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 5

जब मनुष्य भाषा का प्रयोग सामान्य संवाद या दैनिक जीवन की बातचीत के लिए करता है, तब उसे **सामान्य भाषा** कहा जाता है। यह सहज, स्पष्ट और व्यावहारिक होती है। दूसरी ओर, जब भाषा का उपयोग विज्ञान, तकनीक, गणित, या विशिष्ट विषयों को समझाने और प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है, तब वह **वैज्ञानिक या तकनीकी भाषा** कहलाती है। यह अधिक सटीक, तथ्यात्मक और विषय-विशेष पर केंद्रित होती है। दोनों ही भाषाएँ प्रयोजन के अनुसार मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिए। 20

मनुष्य और अन्य जीवों के बीच सबसे बड़ा अंतर भाषा की क्षमता का होता है। भाषा केवल विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम नहीं, बल्कि वह शक्ति है जिसने मानव को एक **प्रबुद्ध प्राणी** के रूप में स्थापित किया है। बिना भाषा के, मानव जीवन का कोई भी कार्य सहज नहीं हो सकता। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं के अनुसार भाषा के विविध रूपों का उपयोग करता है। बातचीत के सामान्य उद्देश्य के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा को '**सामान्य भाषा**' कहा जाता है। यह भाषा सहज, सरल और दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

जब यही भाषा कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि साहित्यिक अभिव्यक्तियों में प्रयुक्त होती है, तब वह '**साहित्यिक भाषा**' कहलाती है। साहित्यिक भाषा में भाव, कल्पना, सौंदर्य और रस का समावेश होता है, जिससे वह पाठकों के हृदय को स्पर्श करती है। इसके विपरीत, जब भाषा का प्रयोग विज्ञान, गणित, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी या अन्य विशिष्ट विषयों की जानकारी देने के लिए किया जाता है, तब वह '**वैज्ञानिक अथवा तकनीकी भाषा**' कहलाती है। यह भाषा तर्कपूर्ण, सटीक और तथ्याधारित होती है।

इस प्रकार, भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि वह **मानव विकास, ज्ञान-विस्तार और अभिव्यक्ति की आधारशिला** भी है।

Result Mitra

उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम के अध्यक्ष की ओर से पुलिस अधीक्षक को पत्र

(विषय: परिवहन सुरक्षा संबंधी कमियों के समाधान हेतु अनुरोध)

उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम
मुख्यालय, ट्रांसपोर्ट नगर
लखनऊ – 226012

दिनांक: 15 अप्रैल, 2025

प्रति,
पुलिस अधीक्षक महोदय
लखनऊ जनपद
उत्तर प्रदेश

विषय: परिवहन सुरक्षा संबंधी कमियों के निराकरण हेतु अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि विगत कुछ समय से राज्य परिवहन निगम की बसों की संचालन व्यवस्था के दौरान अनेक सुरक्षा संबंधी कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं, जिनसे न केवल यात्रियों की सुरक्षा प्रभावित हो रही है, अपितु निगम की छवि को भी क्षति पहुँच रही है।

वर्तमान में बस अड्डों, मुख्य मार्गों तथा रात्रीकालीन मार्गों पर असामाजिक तत्वों की सक्रियता, जेबकतरी, महिलाओं के प्रति अभद्र व्यवहार, ड्राइवर-कंडक्टर के साथ मारपीट जैसी घटनाएँ लगातार सामने आ रही हैं। इसके अतिरिक्त, कई स्थानों पर वाहनों की अवैध पार्किंग के कारण बसों की आवाजाही बाधित हो रही है। ऐसे में यात्रीगण असुरक्षित महसूस कर रहे हैं तथा परिवहन सेवा की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग रहा है।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि निम्नलिखित उपायों पर शीघ्र कार्रवाई की जाए –

1. प्रमुख बस स्टैंडों पर नियमित पुलिस गश्त सुनिश्चित की जाए।
2. संवेदनशील रात्रिकालीन मार्गों पर पीआरवी की तैनाती हो।
3. महिला यात्रियों की सुरक्षा हेतु "महिला हेल्प डेस्क" स्थापित किया जाए।
4. असामाजिक तत्वों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही हेतु निर्देशित किया जाए।

आपके द्वारा यदि उपयुक्त सहयोग प्रदान किया जाता है, तो निश्चित रूप से यात्रियों को एक सुरक्षित, सुव्यवस्थित और भरोसेमंद परिवहन सेवा उपलब्ध कराई जा सकेगी।

आपके सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा में।

सधन्यवाद,

भवदीय,
(दस्तखत)
राजीव शंकर
अध्यक्ष
उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम
लखनऊ

Result Mitra

अधिसूचना

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय
लखनऊ

अधिसूचना संख्या: 126/उपचुनाव/2025
दिनांक: 15 अप्रैल, 2025

विषय: विधानसभा क्षेत्र संख्या – 203 (काल्पनिक नगर) के विधायक के त्यागपत्र के फलस्वरूप रिक्त स्थान पर उपचुनाव की घोषणा संबंधी अधिसूचना।

यह अधिसूचना सूचित करती है कि **श्रीमान रमेश वर्मा**, निर्वाचित विधायक, विधानसभा क्षेत्र संख्या 203 (काल्पनिक नगर), द्वारा **दिनांक 25 मार्च, 2025** को स्वेच्छा से अपना त्यागपत्र विधान सभा अध्यक्ष को सौंपा गया, जिसे **विधान सभा अध्यक्ष द्वारा दिनांक 27 मार्च, 2025** को स्वीकृत किया गया है।

अतः संविधान के अनुच्छेद 190 तथा जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 151(ए) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत निर्वाचन आयोग द्वारा **विधानसभा क्षेत्र संख्या 203 (काल्पनिक नगर)** के रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु उपचुनाव आयोजित किए जाने की घोषणा की जाती है।

निर्वाचन कार्यक्रम की तिथि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पृथक रूप से घोषित की जाएगी।

यह अधिसूचना तत्काल प्रभाव से लागू होगी।

आदेशानुसार,
(दस्तखत)
(डॉ. नीरज श्रीवास्तव)
सचिव,
उत्तर प्रदेश विधान सभा
लखनऊ

Result Mitra

शुद्ध वाक्य:

1. **दंगे में कई निरपराध व्यक्ति मारे गए।**
   स्पष्टीकरण: "निरपराधी" शब्द अशुद्ध है। शुद्ध शब्द है — **निरपराध**, जो विशेषण है।

2 जंगली फल खाकर और झरने का पानी पीकर हम आगे बढ़े
स्पष्टीकरण: वाक्य में दो क्रियाएँ हैं — "फल खाना" और "पानी पीना", इसलिए दोनों क्रियाओं को स्पष्ट रूप से जोड़ा गया।

3 **यह एक गंभीर समस्या है।**
   स्पष्टीकरण: "गहरी" समस्या कहना मुहावरेदार तो हो सकता है, पर शुद्ध प्रयोग में **"गंभीर समस्या"** अधिक उपयुक्त और मानक है।

4 **यह आँखों-देखी घटना है।**
   स्पष्टीकरण: "आँखों से देखी घटना" अशुद्ध वाक्य है। प्रचलित रूप **"आँखों-देखी"** एक विशेषण है।

5 **आपके घर में रखी पुस्तक को मैंने देख ली।**

विलोम शब्द:

1. **विपन्न** – संपन्न
2. **स्तुत्य** – निंदनीय
3. **उद्धत** – विनीत / नम्र
4. **त्याज्य** – ग्राह्य / वरणीय
5. **सलज्ज** – निर्लज्ज
6. **उदात्त** – अनुदात्त / नीच
7. **कृतज्ञ** – कृतघ्न
8. **नैसर्गिक** – कृत्रिम
9. **स्निग्ध** – रूक्ष
10. **विहित** – निषिद्ध / अविहित

Result Mitra

शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों का निर्देश:

1. **निरूपण**
   - **उपसर्ग:** नि-
   - **अर्थ:** नीचे, स्पष्ट रूप से, भलीभाँति
   - निरूपण = किसी बात का भलीभाँति विवरण करना या स्पष्ट करना।
2. **पर्यटन**
   - **उपसर्ग:** परि-
   - **अर्थ:** चारों ओर, घूमने वाला
   - पर्यटन = स्थान-स्थान पर घूमना, यात्रा करना।
3. **दुस्साध्य**
   - **उपसर्ग:** दुस्-
   - **अर्थ:** कठिन, बुरा, कठिनाई उत्पन्न करने वाला
   - दुस्साध्य = जिसे साधना कठिन हो, कठिन कार्य।
4. **निर्वसन**
   - **उपसर्ग:** निर्
   - **अर्थ:** रहित, बिना, बाहर की ओर
   - निर्वसन = वस्त्रों से रहित, नग्न।
5. **संगोष्ठी**
   - **उपसर्ग:** सम्- (यहाँ संधि के कारण "संगोष्ठी" बना है)
   - **अर्थ:** साथ, मिलकर
   - संगोष्ठी = किसी विषय पर मिलकर विचार-विमर्श करने की बैठक।

प्रत्ययों का निर्देश:

1. **तन्द्रालु**
   - **मूल शब्द:** तन्द्रा
   - **प्रत्यय:** - आलु'
   - **अर्थ:** जिसमें तन्द्रा हो, अर्थात् आलसी या सुस्त।

2. **गड़रिया**
   - **मूल शब्द:** गड़र
   - **प्रत्यय:** इया

Result Mitra TM

- **अर्थ:** भेड़-बकरी चराने वाला व्यक्ति।

3. **राधेय**
   - **मूल शब्द:** राधा
   - **प्रत्यय:** - **एय**
   - **अर्थ:** राधा का पुत्र — जैसे कर्ण के लिए प्रयुक्त।

4. **शैव**
   - **मूल शब्द:** शिव
   - **प्रत्यय:** - अ
   - **अर्थ:** शिव का अनुयायी।

5. **नीलिमा**
   - **मूल शब्द:** नील
   - **प्रत्यय:** - इमा
   - **अर्थ:** नीला होने की अवस्था या गुण — जैसे नीला रंग।

वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द:

1. **तैरकर पार करने वाला** – **तितीर्षा**

2. **बच्चों से लेकर बूढ़ों तक** – आबालवृद्ध
   (समस्त आयुवर्गों को सूचित करने वाला शब्द)

3. **आकाश को चूमने वाला** – **गगनचुंबी**
   (अर्थात् बहुत ऊँचा – जैसे गगनचुंबी इमारतें)

4. **जो सूर्य न देखे ऐसी स्त्री** – असूर्यम्पश्या

5. **बिना पलक झपकाए** – निर्निमेष

मुहावरें / लोकोक्तियाँ – अर्थ एवं वाक्य प्रयोग (10+20)

Result Mitra TM

1. **चूहें के चाम से नगाड़ा नहीं बनता**
   - अर्थ: अल्प साधन से बड़े कार्य नहीं किए जा सकते।
   - वाक्य: केवल दो लोगों की टीम से पूरे विभाग का काम करवाना चूहें के चाम से नगाड़ा बनाने जैसा है।
2. **कुँए में भांग पड़ना**
   - अर्थ: जब कोई बुराई पूरे समूह में फैल जाए।
   - वाक्य: पूरे विभाग में भ्रष्टाचार इस कदर फैला है जैसे कुएं में भांग पड़ गई हो।
3. **झूठ के पाँव नहीं होते**
   - अर्थ: झूठ टिकता नहीं, जल्दी पकड़ा जाता है।
   - वाक्य: उसने चोरी नहीं करने का झूठ बोला, पर झूठ के पाँव नहीं होते – वह रंगे हाथों पकड़ा गया।
4. **जब तक साँस, तब तक आस**
   - अर्थ: जब तक जीवन है, तब तक आशा भी बनी रहती है।
   - वाक्य: भले ही इलाज कठिन था, पर माँ ने हार नहीं मानी — जब तक साँस, तब तक आस।
5. **फूहड़ चाले, नौ घर हालें**
   - अर्थ: इसका मतलब है कि खराब आदतों या अयोग्य तरीके से काम करने से दूसरों पर भी बुरा प्रभाव पड़ सकता है।
   - वाक्य: रामू की बुरी आदतों को प्रभाव मोहल्ले के सभी बच्चों पर पड़ना बताता है कि **फूहड़ चाले, नौ घर हालें**
6. **गुरु कीजे जान के, पान पीजे छान के**
   - अर्थ -- हर काम सोच समझ कर करना चाहिये
   - वाक्य - देखो, जल्दबाजी में कोई काम न कर बैठना, बुजुर्गों ने ठीक ही कहा है– गुरु कीजै जान **के**, पानी पीजै छान **के**
7. **जैसा देश वैसा भेष**
   - अर्थ: परिस्थिति या स्थान के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।
   - वाक्य: विदेश यात्रा पर जाकर उसने वहाँ के नियमों का पालन किया — जैसा देश वैसा भेष।
8. **अरहर की टट्टी गुजराती ताला**
   - अर्थ: अत्यधिक कमजोर व्यवस्था को बाहरी रूप से मजबूत दिखाना।
   - वाक्य: सरकार ने दिखावे के लिए चेकपोस्ट पर दो सुरक्षाकर्मी तैनात कर दिए — यह तो अरहर की टट्टी पर गुजराती ताला लगाने जैसा है।

Result Mitra TM

9. **आठ-आठ आँसू बहाना**
   - अर्थ: अत्यधिक दुःख प्रकट करना।
   - वाक्य: परीक्षा में असफल होने पर वह आठ-आठ आँसू बहा रही थी।

10. **पर उपदेश कुशल बहुतेरे**
    - अर्थ: दूसरों को उपदेश देने वाले बहुत होते हैं, पर स्वयं अमल नहीं करते।
    - वाक्य: वह खुद समय का पालन नहीं करता, लेकिन सबको समयनिष्ठ रहने की सलाह देता है — पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

TM
Result Mitra